पुणे की जी20 शिक्षा मंत्रिस्तरीय बैठक और वैश्विक शिक्षा

रामानन्द[1]

जी20 सदस्य देशों और आमंत्रित देशों के शिक्षा मंत्री, 22 जून 2023 को पुणे, भारत में मिले, जिसमें मानव गरिमा और सशक्तिकरण के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और प्रशिक्षण की महत्वपूर्ण भूमिका पर गंभीरता से विमर्श किया गया। इस दौरान हर स्तर पर सुलभ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और प्रशिक्षण और सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देने के माध्यम से अधिक सुलभ, न्यायसंगत, समावेशी और टिकाऊ भविष्य प्राप्त करने की दिशा में मिलकर काम करने की प्रतिबद्धता को प्रकट किया गया। ऐसी प्रतिबद्धता निश्चित तौर पर 2023 में जी20 प्रेसीडेंसी की थीम, एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य के दृष्टिकोण को सफलीभूत करेगी।

सतत विकास के लिए संयुक्त राष्ट्र 2030 एजेंडा के अनुरूप, और जैसा कि पिछले जी20 शिक्षा मंत्रियों की घोषणाओं और बयानों में व्यक्त किया गया है, सतत विकास के लिए हर परिस्थिति में शिक्षा की निरंतरता अनिवार्य है । और शिक्षा एक मानव अधिकार है और अन्य अधिकारों की प्राप्ति में योगदान दे सकती है।

संयुक्त राष्ट्र 2022 ट्रांसफॉर्मिंग एजुकेशन समिट के अनुसार सभी शिक्षार्थी, चाहे उनकी आयु समूह, लिंग, आर्थिक,| सामाजिक-सांस्कृतिक, जातीय, धार्मिक और क्षेत्रीय पृष्ठभूमि कुछ भी हो, और जो शारीरिक रूप कमजोर या सीखने में कठिनाइयों या विशेष जरूरतों वाले मानसिक विकलांगों को गुणवत्तापूर्ण, समावेशी और न्यायसंगत शिक्षा और प्रशिक्षण तक पहुंच के साथ-साथ आपात स्थिति सहित - सभी स्थितियों के माध्यम से उनकी भलाई के लिए सहायता मिले ऐसी नीतियों की तरफ हमारा झुकाव हो ताकि वे बेहतर भविष्य बनाने में सक्षम हो सकें।

[1] *नीति अनुसंधान और शासन केंद्र, नई दिल्ली*

इस बात पर जोर दिया जा रहा है कि शिक्षा न केवल अकादमिक शिक्षा के बारे में है, बल्कि शिक्षण और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से जीवन, तकनीकी और व्यावसायिक कौशल विकसित करने के बारे में भी है जो शिक्षार्थियों को भविष्य के लिए तैयार करती है और समाज में सार्थक योगदान देने में सक्षम बनाती है। इस संबंध में व्यापक रणनीतियाँ और त्वरित नीति निर्देश विकसित किया जाना आवश्यक है।

डिजिटल परिवर्तनों, महिलाओं और बालिकाओं के सशक्तिकरण को आगे बढ़ाने, हरित अर्थव्यवस्था के लिए स्थायी परिवर्तन का समर्थन करने, सतत विकास के लिए शिक्षा और जीवन शैली को त्वरक के रूप में योगदान देने वाली भूमिका स्पष्ट है जो एसडीजी प्राप्त करने की दिशा में कार्य को आगे बढ़ा सकते हैं। आज जिस शिक्षा-है आधारित विकास की परिकल्पना की जाती, उसे आगे बढ़ाने में कई कारकों का महत्व है ।

विशेष रूप से मिश्रित शिक्षा के संदर्भ में मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता सुनिश्चित करना

गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यकाल शिक्षा और देखभाल शिक्षार्थियों की शिक्षा और विकास की नींव है। इसलिए किफायती, न्यायसंगत, गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षण वातावरण तक पहुंच बढ़ाने के प्रयास की आवश्यकता है जो समावेशी और सुरक्षित हो। इस दौरान प्रत्येक शिक्षार्थी के स्वास्थ्य, पोषण और सामाजिक-भावनात्मक कल्याण पर ध्यान देने और उनके समग्र विकास करने की आवश्यकता पर ध्यान दिया जाना चाहिए । इस संबंध में, हम मातापिता-, समुदाय और अन्य श्रमिकों की मूल्यवान भूमिका को भी स्वीकार करनी पड़ेगी।

सफल शिक्षा, रोजगार और आजीवन सीखने के लिए मूलभूत शिक्षा साक्षरता संख्यात्मकता और सामाजिक-(भावनात्मक कौशल) महत्वपूर्ण बिल्डिंग ब्लॉक है। बुनियादी शिक्षा के बिना, बच्चे और युवा अपनी पूरी क्षमता का सर्वोत्तम उपयोग नहीं कर सकते हैं। एसडीजी4 की उपलब्धि का समर्थन करने की हमारी प्रतिबद्धता के संदर्भ में विशेष रूप से स्कूलों की भूमिका और सभी शिक्षार्थियों, विशेष रूप से सबसे कमजोर लोगों के नामांकन और उसे बनाए रखने और उसमें वृद्धि हेतु सभी उपाए करने होंगे। यह सुनिश्चित करने के लिए तत्काल और सामूहिक कार्रवाई की आवश्यकता है । सभी शिक्षार्थियों को मूलभूत शिक्षा प्राप्त हो, ताकि 2030 तक बच्चों, विशेष रूप से विकलांग लड़कियों और बच्चों का प्रतिशत, एक सरल पाठ को पढ़ने और समझने और सरल गणित करने में सक्षम हो।

वर्तमान में स्थानीय भाषाओं, जहां लागू हो, और सांकेतिक भाषाओं सहित विकासात्मक रूप से उपयुक्त दृष्टिकोण और सामग्रियों के उपयोग सहित नवीन तकनीकों के माध्यम से सीखने पर ज़ोर दिया जा रहा है। औपचारिक सीखने के माहौल के भीतर व्यापक और निरंतर सीखने के मूल्यांकन के लिए एक सशक्त प्रणाली विकसित की जा रही है, ताकि सभी छात्रों की विविध आवश्यकताओं को समय पर संबोधित किया जा सके। शिक्षण-सीखने की प्रक्रिया में मिश्रित दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकियों के उपयोग से प्रक्रिया सरल की जा सकती है।

बेहतर मूलभूत शिक्षा सुनिश्चित करने में सभी शिक्षकों और शिक्षा सहायक कर्मचारियों की केंद्रीय

भूमिका को महत्व दिया जाना चाहिए जिसमें सभी शिक्षकों को उनके निरंतर व्यावसायिक विकास के लिए अवसर प्रदान करना , उनके प्रारंभिक प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देना और नवीन शिक्षण-सीखने की प्रक्रियाओं का समर्थन करने के लिए उनकी क्षमताओं का निर्माण करना शामिल है। ऐसे माहौल को बढ़ावा देने के लिए काम करेंगे जिससे शिक्षक अपने मुख्य व्यवसायिक कर्तव्यों पर ध्यान केंद्रित कर सकें।

हर स्तर पर तकनीकी सक्षम शिक्षण को अधिक-समावेशी, गुणात्मक और सहयोगात्मक बनाना

संदर्भ के अनुरूप, समावेशी, न्यायसंगत और सुलभ गुणवत्ता वाली शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए एक समर्थकारी और आमने-सामने की शिक्षा का समर्थन करने के लिए एक उपकरण के रूप में डिजिटल प्रौद्योगिकियों की परिवर्तनकारी क्षमता की पुष्टि भी की गई। प्रौद्योगिकी पारिस्थितिकी और सीखने के संसाधनों को विकसित करने के लिए सामूहिक रूप से काम करने की आवश्यकता है, जिसमें स्थानीय भाषाएं भी शामिल हैं, जो सस्ती और आसानी से सुलभ हों। इस दिशा में शैक्षिक सामग्री, प्रौद्योगिकी और शिक्षाशास्त्र के लिए उपयुक्त मानकीकृत ढांचे के विकास और उपयोग को प्रोत्साहित किया जा रहा है। सीखने के परिणामों का आकलन करने के लिए एक प्रभावी तंत्र; तकनीकी सक्षम शिक्षा की उपलब्धता-, गुणवत्ता, प्रभावशीलता और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए शिक्षकों और प्रशिक्षकों का क्षमता निर्माण किया जाना आवश्यक है।

सुलभ, न्यायसंगत, समावेशी, नैतिक, संरक्षित - गोपनीयता और सुरक्षित तकनीकी बुनियादी ढांचे की बाधाओं का समाधान करके सभी शिक्षार्थियों के लिए डिजिटल डिवाइड को दूर किया जाना चाहिए। हम शिक्षार्थियों को डिजिटल वातावरण में उनकी गोपनीयता, सुरक्षा और सुरक्षा की दिशा में काम करते हुए डिजिटल लाभ उठाने के लिए आवश्यक कौशल के साथ आगे बढ़ सकते हैं।

शिक्षा में डिजिटल प्रौद्योगिकियों के उपयोग में नैतिक प्रथाओं को प्रोत्साहित किया जा रहा है, खुले शैक्षिक संसाधनों को बढ़ावा देते हुए जहां भी उपयुक्त हो, डिजिटल संसाधनों की अंतरसंचालनीयता को मजबूत किया जा रहा है, जिससे गोपनीयता और सुरक्षा की रक्षा करते हुए शिक्षा में डेटा और विश्लेषण के लाभों का फ़ायदा उठाया जा सके।

सुलभ, न्यायसंगत, समावेशी, नैतिक, गोपनीयता-संरक्षित और सुरक्षित तकनीकी बुनियादी ढांचे की बाधाओं का समाधान करके सभी शिक्षार्थियों के लिए डिजिटल डिवाइड को दूर करने की अपनी प्रतिबद्धता को जी20 सदस्य देशों द्वारा दुहराया गया । शिक्षार्थियों को डिजिटल वातावरण में उनकी गोपनीयता, सुरक्षा और सुरक्षा की दिशा में काम करते हुए डिजिटल सीखने से लाभ उठाने के लिए आवश्यक कौशल हासिल करने के अवसर प्रदान करने का प्रयास किया जा रहा है। शिक्षा में डिजिटल प्रौद्योगिकियों के उपयोग में नैतिक प्रथाओं को प्रोत्साहन करते हैं, खुले शैक्षिक संसाधनों को बढ़ावा, और जहां भी उपयुक्त हो, डिजिटल संसाधनों की अंतरसंचालनीयता को मजबूत किया जा रहा है, जिससे

गोपनीयता और सुरक्षा की रक्षा करते हुए शिक्षा में डेटा और विश्लेषण का लाभ उठाया जा सके।

वर्तमान में उच्च गुणवत्ता वाली तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण अवसरों तक विस्तारित पहुंच प्रदान करने की दिशा में काम करना है, जिसमें विस्तारित कार्य-आधारित शिक्षा, डिजिटल शिक्षण वातावरण और हरित बदलाव को बढ़ावा देना शामिल है।, यह श्रम की जरूरतों को प्रभावी ढंग से पूरा करता है, इस दिशा में कार्य की सराहना की जानी चाहिए। डिजिटल कौशल, पर्यावरण साक्षरता, वित्तीय कौशल, संज्ञानात्मक कौशल, नागरिकता कौशल, सामाजिक - भावनात्मक कौशल, उद्यमशीलता कौशल और STEAM3 दक्षताओं के अधिग्रहण में सभी उम्र के शिक्षार्थियों को सहयोग दिया जाता है ताकि उन्हें प्रौद्योगिकी-आधारित भविष्य के लिए तैयार करने में मदद मिल सके। और पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ अर्थव्यवस्था और समाज के लिए एक न्यायसंगत और समावेशी परिवर्तन को स्थापित किया जा सके । आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मूल रूप से शिक्षण और सीखने को फिर से परिभाषित कर रहा है और परिणामस्वरूप ज्ञान और कौशल की मांग को नया आकार दे रहा है। इसलिए, जनरेटिव एआई सहित एआई के विकास के समन्वय और व्यवस्थित मूल्यांकन को प्रोत्साहित करते हैं, जो शैक्षिक प्रणालियों के लिए एक चुनौती है, और जिसमें उन्हें सुधारने की क्षमता भी है। इसलिए शिक्षा और कौशल में एआई के न्यायसंगत और समावेशी उपयोग का और मानवाधिकारों का सम्मान किया जाना चाहिए।

शिक्षा और प्रशिक्षण में समृद्ध सहयोग के माध्यम से अनुसंधान को मजबूत करना और नवाचार को बढ़ावा देना

आज दुनिया जिन चुनौतियों का सामना कर रही है, उनके लिए देशों के बीच अंतःविषय अनुसंधान और समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है। इसलिए टिकाऊ और समावेशी विकास में प्रतिस्पर्धी और ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था ज्ञान त्रिकोण के तीन पक्षों: शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार के एकीकरण की मांग की जा रही है। शिक्षा और प्रशिक्षण में संयुक्त शैक्षणिक और अनुसंधान पहल की सुविधा के लिए जी20 सदस्य देशों और आमंत्रित देशों में उच्च शिक्षा संस्थानों के बीच सहयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। यह सहयोग संयुक्त/दोहरी, ट्विनिंग डिग्री कार्यक्रमों का रूप ले सकता है। इस दिशा में छात्रों, संकाय और कर्मचारियों की गतिशीलता; विद्वतापूर्ण ज्ञान का विस्तार; शैक्षिक संस्थानों के बीच अनुसंधान, साक्ष्य और संसाधनों को उचित रूप से साझा करना और देशों की संबंधित प्राथमिकताओं, कानूनों और विनियमों के अनुसार संस्थानों का सहयोग को जारी रखा जाना चाहिए। सभी देशों को बहुविषयक - अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए उद्योग- सरकारी संबंधों को मजबूत करके अपने-अकादमिक क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देने- अपने देशों के भीतर प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

भावी मार्ग

आज 21 वीं सदी मानव पूंजी विकास में निवेश के महत्व के अनुसार और चुनौतियों का जवाब देने के लिए हमारी शिक्षा प्रणालियों को बदलने के लिए एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य की सच्ची भावना में एक साथ काम करना और हर-एक का सहयोग करना आवश्यक है। संतुलन और सदभाव के आधार पर भलाई के लिए

अधिक न्यायसंगत, समावेशी, लचीला और अनुकूली गुणवत्ता वाली शिक्षा और कौशल प्रणाली बनाने के लिए एक दूसरे के साथ सहयोग अपेक्षित हैं। भविष्य के सभी शिक्षण और प्रशिक्षण के लिए मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मक कौशल को प्राथमिक निर्माण खंड के रूप में मान्यता देते हुए, विशेष रूप से दुनिया के सबसे कमजोर बच्चों के लिए, इस योग्यता को हासिल करने में शिक्षार्थियों का सहयोग हेतु वर्ष 2030 तक मिलकर काम करने का लक्ष्य है। महिला संवेदनशील कार्यक्रमों के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षण तथा सीखने और कौशल को बढ़ावा देने के लिए सहयोगी समाधान एवं नवाचार को प्रोत्साहित करने का कार्य किया जाएगा। विश्व स्तर पर प्रासंगिक दक्षताओं के निर्माण, अनुभव तथा साक्ष्य साझा करके भविष्य के लिए कौशल निर्माण करनेके लिए आजीवन सीखने को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। संयुक्त कार्यक्रमों, छात्र और कर्मचारियों की गतिशीलता और ऐसी अन्य प्रथाओं के माध्यम से अपने शैक्षणिक संस्थानों के बीच अकादमिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए काम करने की योजना है। सदस्य देशों द्वारा अपने देश और उससे बाहर शिक्षा आधारित विकास के दृष्टिकोण- और इस दिशा में मिलकर काम करने के लिए अपनी गहरी प्रतिबद्धता प्रकट की गई ।

राहुल द्रविड़

राहुल शरद द्रविड़ (जन्म 11 जनवरी 1973) एक मराठी परिवार में जन्मे और बैंगलोर में पले-बढ़े, उन्होंने 12 साल की उम्र में क्रिकेट खेलना शुरू किया और बाद में अंडर-15, अंडर-17 और अंडर-19 स्तरों पर कर्नाटक का प्रतिनिधित्व किया। द्रविड़ को 2000 में विजडन क्रिकेटर्स अल्मनैक द्वारा वर्ष के सर्वश्रेष्ठ पांच क्रिकेटरों में से एक नामित किया गया था और 2004 में उद्घाटन आईसीसी पुरस्कार समारोह में प्लेयर ऑफ द ईयर और टेस्ट प्लेयर ऑफ द ईयर पुरस्कार प्राप्त किया था। दिसंबर 2011 में, वह कैनबरा में ब्रैडमैन ओरेशन देने वाले पहले गैर-ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर बने वे भारतीय राष्ट्रीय टीम के पूर्व कप्तान हैं, जो वर्तमान में इसके मुख्य कोच के रूप में कार्यरत हैं। सीनियर पुरुष राष्ट्रीय टीम में नियुक्ति से पहले, द्रविड़ राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) में क्रिकेट के प्रमुख और भारत अंडर-19 और भारत ए टीमों के मुख्य कोच थे। उनके संरक्षण में, अंडर-19 टीम 2016 अंडर-19 क्रिकेट विश्व कप में उपविजेता रही और 2018 अंडर-19 क्रिकेट विश्व कप जीता। अपनी सफल बल्लेबाजी तकनीक के लिए जाने जाने वाले द्रविड़ ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 24,177 रन बनाए और उन्हें क्रिकेट के इतिहास में सबसे महान बल्लेबाजों में से एक माना जाता है। उन्हें आम बोलचाल की भाषा में मिस्टर डिपेंडेबल के नाम से जाना जाता है और अक्सर उन्हें द वॉल कहा जाता है।